Ambedkar's Political Ideas

डॉ० भीमराव अम्बेडकर आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतक के जिन्हे दलितका मसीहा तथा भारतीय संविधान का निर्माता भी कहा जाता है।

दलित मसीहा भीमराव अम्बेदकर एक अर्थशास्त्री, विधिवेत्ता, समाज-सुधारक और महान कर्मयोगी थे। "व्यवस्था का विरोध करना अलग बात है लेकिन व्यवस्था परिवर्तन के लिए सत्ता को विवश करना अलग बात है" जो उनके कर्मयोगी रूप को दिखाता है। सारा जीवन वे सामाजिक रूढ़िवादिता, जातियता, अस्पृश्यता, सामाजिक समरसता, मौलिक अधिकार, मानवीय न्याय, समाजवाद के प्रति संघर्षरत रहे जिनकी पुष्टि उनके कार्यों, लेखों और पुस्तकों से होती है।

i) P.hd Thesis - Caste in India Their mechanism, Genesis & Devlopment.

ii) Provincial Decentralization of Imperical Finance in British India.

iii) Thoughts of Linguistic States

(iv) क्रांति - प्रतिक्रांति (v) हिन्दुत्व का दर्शन

(vi) कांग्रेस और गांधी ने अछूतों के लिए क्या किया।

इनके विचारों के मुख्य स्रोत रहे हैं।

⇒ Political Ideas :-

(i) प्रजातंत्र (Democracy) :-

(ii) कानून :-

(iii) समाजवाद के समर्थक :→

(iv) पार्टी or दलीय व्यवस्था (Party System)

(v) राज्य :→

(vi) शक्ति का पृथक्करण :→

(vii) धर्मनिरपेक्षता :→

(viii) विदेश नीति :→

(ix) सामाजिक विचार :→

Scanned with CamScanner

जनतंत्र (Democracy)

अम्बेडकर एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था चाह रहे थे जिसमें धर्म, सत्ता, राज्य, पूँजीवाद, पुरोहितवाद आदि द्वारा पुरुष तथा ... का शोषण समाप्त हो। जनतंत्र की व्याख्या करते हुए वे लिखते हैं कि " जनतंत्र सार्वजनिक जीवन जीने की पद्धति है। जनतंत्र की जड़ें व्यक्ति के सामाजिक संबंधों में खोजनी पड़ती है। यह एक ऐसी शासन-प्रणाली है जिसके द्वारा आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में बिना रक्त की एक बूँद बहाए क्रांतिकारी परिवर्तन लाए जा सकते हैं। इसतरह अम्बेडकर का जनतंत्र लिंकन के जनतंत्र से भिन्न है। वे संसदीय शासन-प्रणाली के तीन गुण मानते थे :

(i) वंशानुगत शासक का अभाव।

(ii) व्यक्ति सत्ता प्रतीक नहीं होगा।

(iii) निर्वाचित प्रतिनिधि में जनता का विश्वास है।

जनतांत्रिक व्यवस्था की सफलता के लिए मजबूत विरोधी दल की आवश्यकता का वे प्रतिपादक रहे हैं। उनका मानना था कि एक ही व्यक्ति अथवा एक ही राजनीतिक दल के हाथों अगर सत्ता सुरक्षित रह जाए तो ऐसी स्थिति में उस संसदीय प्रणाली तथा जनतंत्र की हत्या हो जाती है तथा अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। वे जनतंत्र के द्वारा सत्ता को जनहित की ओर मोड़ने का साधन मानते थे। इनका मानना था कि सामाजिक व्यवस्था ही जनतंत्र को प्रभावित करती है इसलिए वे कुछ गुणों की उपस्थिति को आवश्यक माना है :-

(i) समाज में विषमता अधिक न हो।

(ii) वहाँ विरोधी दल का अस्तित्व हो।

(iii) संवैधानिक आचरण का पालन किया जाए।

(iv) बहुसंख्यक की दादागीरी न हो।

(iv) जागृत जनमत हो।

(v) नैतिक मूल्यों को महत्व दिया जाए।

इन्हीं पर जनतंत्र आधारित होती है।

इनकी जनतांत्रिक व्यवस्था की कल्पना में नैतिकता और सामाजिकता दो प्रमुख मूल्य रहे हैं। उनकी कल्पना स्थितिवादी और जड़वादी न

Scanned with CamScanner

दरिद्रता, अशिक्षा, जाति और वर्ण-भेद जनतंत्र के लिए बहुत बड़े खतरे हैं। उनके अनुसार वर्गीय समाज जनतंत्र के लिए खतरनाक साबित हुए हैं। अतः राजनीतिक जनतंत्र के अस्तित्व में लाने से पूर्व वे सामाजिक जनतंत्र को मजबूत करना चाहते थे। इसके बिना राजनीतिक जनतंत्र क्षणभंगुर है। इसमें दो बातें महत्वपूर्ण थी —
(i) अपने सहयोगी के प्रति बंधुत्व की भावना, समता की प्राप्ति तथा सामाजिक बंधनो से मुक्ति। इसीकारण वे समानता तथा स्वतंत्रता लाने की बात करते हैं।

(ii) कानून :—

अम्बेदकर का मानना था कि कानून के लिए मनुष्य नहीं है, कानून ने मनुष्य को नहीं बनाया है बल्कि मनुष्य ने मनुष्य के सुख-दुख हेतु कानून बनाया है। अतः इसमें सतत संशोधन की आवश्यकता है जो सबकी सहमति से होना चाहिए। कानून समान हो, सामाजिक हो तथा मानवीय होना चाहिए।

(iii) समाजवादी विचार :- दारिद्रता पर हमला उनके समाजवाद की प्रेरणा थी। व्यक्तिगत सम्पत्ति का अधिकार और व्यक्तिगत लाभ के लिए किए जानेवाले प्रयत्नो पर किसी भी प्रकार का नियंत्रण न होना को वे गलत मानते थे। आर्थिक विषमता को दूर करने के लिए वे इनपर राज्य का नियंत्रण चाहते थे लेकिन वे "मार्क्सवादी समाजवाद" के समर्थक नहीं थे। उन्होंने स्पष्ट कहा है कि "राज्य में अधिकाधिक उत्पादकता का निर्माण होना चाहिए। आर्थिक क्षेत्र पर राज्य का नियंत्रण होना चाहिए। निजि उद्योग धंधे का विकास या अवसर होना चाहिए और सम्पत्ति का न्यायपूर्ण बंटवारा होना चाहिए। वे निजी सम्पत्ति को पूर्णतः नष्ट करने के पक्षधर नहीं थे बल्कि राज्य नियंत्रण के साथ इनके संतुलन के पक्षधर थे।

गाँधीजी के ट्रस्टीशीप का वे विरोधी थे क्योंकि उनके अनुसार यह पूँजीपति के लिए एक रक्षा कवच का कार्य करता है।

Scanned with CamScanner

iv) दल-व्यवस्था :- समर्थक थे → द्विदलीय व्यवस्था

अम्बेडकर दल-व्यवस्था के समर्थक थे तथा वे प्रगतिशील शक्तियों के एकत्र होकर चुनाव लड़ने हेतु पार्टी को आवश्यक मानते थे। इसके लिए वे Shedule Caste Federation की भी स्थापना की थी। वे एक हाथ में या पार्टी के हाथ में निरंतर सत्ता रहना जनतंत्र हेतु घातक मानते थे इसलिए द्विदलीय व्यवस्था को अनिवार्य मानते थे। उन्होंने दल के गठन की तीन पद्धति को बतलाया है:

(i) पार्टी का नेतृत्व

(ii) व्यवसायिक राजनीतिज्ञ

(iii) पार्टी के प्रति भावना और निष्ठा

अम्बेडकर तीसरी पद्धति को ही पार्टी के लिए आवश्यक मानते हैं। जिसके कारण पार्टी फलती-फूलती है। पार्टी का अर्थ जनमत को क्रियाशील करना है। जिसके लिए पार्टी

(क) जनता से घनिष्ठ संबंध स्थापित करे

(ख) जनता के बीच विचारों का प्रचार करें।

अन्त में वे तीसरी पार्टी की वकालत करने लगे ~

(v) राज्य :- समर्थक

अम्बेडकर राज्य को समाज सेवा का साधन मानते थे स्वतंत्रता, अधिकार की रक्षा, सामाजिक-आर्थिक समानता, आंतरिक शांति तथा बाह्य सुरक्षा हेतु राज्य महत्वपूर्ण है। उनका मानना था कि राज्य का अस्तित्व का आधार शक्ति नहीं बल्कि लोगों की नियम पालन व आज्ञाकारिता की प्रवृत्ति है।

उन्होंने राष्ट्रीयता संबंधी विचार देते हुए कहा है कि एक भाषा, एक जीवन पद्धति एवं एक धर्म राष्ट्रीयता के आधार है। वे भाषाई आधार पर राज्य के गठन के विरोधी थे। साथ ही किसी भी स्थिति में भारत का कोई भी भाग भौगोलिक, आर्थिक और जनसंख्या की दृष्टि से अधिक बड़ा न हो।

अतः अम्बेडकर राज्य के समर्थक थे।

Scanned with CamScanner

(vi) शक्ति का पृथक्करण :-

अम्बेदकर लॉक तथा मॉन्टेस्क्यू द्वारा प्रतिपादित शक्ति के पृथक्करण को मानते थे। वे विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के केन्द्रीय शक्ति के पृथक्करण के समर्थक थे। इसलिए संसदीय प्रजातंत्र के प्रशासक होते हुए भी वे U.S.A के ढाँचे के अध्यक्षीय शासन-प्रणाली को उपयुक्त मानते थे। उनके अनुसार इस शासन प्रणाली में शासन की शक्ति और व्यक्ति की स्वतंत्रता के बीच एक संतुलन रहता है।

(vii) धर्मनिरपेक्षता :- अम्बेदकर धर्म निरपेक्षता के बहुत बड़े समर्थक थे। हर व्यक्ति को अन्तःकरण की स्वतंत्रता तथा अपनी मर्जी के अनुसार किसी भी धर्म को स्वीकार / अपनाने तथा उसका प्रचार करने होनी चाहिए। राज्य का अपना कोई धर्म न हो। राज्य किसी भी धर्म का पोषक न हो तथा धर्म भी कानून के अनुसार लोकहितकारी संस्था चलाने को स्वतंत्र हो।

(viii) विदेश नीति - अम्बेदकर का मानना था कि विदेश नीति शांतिपूर्ण एवं स्वतंत्र अस्तित्व का होना चाहिए। वे अपने देश की सुरक्षा खतरे में रखकर शांति के प्रचार के विरोधी थे। सैनिक सम्पन्न राष्ट्र होना उन्हे बेहद पसंद था। क्योंकि जनतांत्रिक प्रणाली बनाए रखने हेतु सीमा सुरक्षा की सर्वाधिक आवश्यकता होती है इसलिए जो भी सहायता दे उसी से मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करना चाहिए।

(ix) सामाजिक विचार - Verna System

अम्बेदकर राजनीतिज्ञ से ज्यादा समाजसुधारक थे तथा भारतीय इतिहास में उन्हे समाजसुधारक के रूप में ही ज्यादा प्रसिद्धि मिली है। उनके सामाजिक विचार के दो मूल तत्व है :-
(i) Verna System (ii) Untouchability

अम्बेदकर छुआ-छूत के विरोधी थे तथा उन्होंने अस्पृश्यता को मानव-निर्मित दोष माना है। इसकी समाप्ति हेतु वे अंतरजातीय विवाह को उपर्युक्त मानते थे।

Scanned with CamScanner

आलोचना :-

अम्बेडकर के राजनीतिक विचारों के विवेचन के आधार पर कुछ विचारों पर उँगली उठायी जाती रही है जो निम्न है -

(i) प्रखर राष्ट्रीयता और जनतंत्र के प्रति अगाढ़ निष्ठा के कारण वे बड़ी-से-बड़ी कीमत देने को तैयार है।

(ii) मजबूत विरोधी दल का वे प्रतिपादन करते है।

(iii) आर्थिक पुर्नसंरचना में वे पूँजी पर नियंत्रण चाहते है।

(iv) वे भारत की तटस्थता के विरोधी थे।

(v) अछूत के उद्धार हेतु वे राष्ट्र को भी बलिदान करने को तैयार थे।

(vi) अम्बेडकर ने सामाजिक-आर्थिक विकास हेतु समानता पर बल दिया लेकिन वे केवल दलित की ही वकालत करते रहे अन्य का नहीं।

(vii) अम्बेडकर का मानना था कि उच्च वर्ग द्वारा दलितों का शोषण होता है लेकिन क्या उचित है कि दलित भी उनका शोषण करे क्योंकि कीचड़ से कीचड़ नहीं धुलता।

⇒ निष्कर्ष :

Ambedkar के राजनीतिक विचारों का केन्द्रबिन्दु मनुष्य था। अतः वे प्रारंभ से अंत तक मनुष्य की समानता, स्वतंत्रता आदि की वकालत करते रहे तथा संघर्षरत भी रहे अनेक कठिनाईयों या कष्टों के बाद भी वे हारे हों ऐसा नहीं। इसी कारण वे आज विश्व के महानतम में विशेष महत्व रखते है।

Scanned with CamScanner